



*Journal of Advances and  
Scholarly Researches in  
Allied Education*

*Vol. XI, Issue No. XXI,  
April-2016, ISSN 2230-7540,  
ISSN 2230-7540*

**भौतिक पर्यावरण पर जनसंख्या वृद्धि के प्रभाव**

AN  
INTERNATIONALLY  
INDEXED PEER  
REVIEWED &  
REFEREED JOURNAL

# भौतिक पर्यावरण पर जनसंख्या वृद्धि के प्रभाव

Shashikala Patel\*

Research Scholar, Awdesh Pratap Singh University, Rewa (MP)

सार - बढ़ती आबादी का समर्थन करने के लिए, जंगलों को खतरनाक दर पर नष्ट किया जा रहा है। मनुष्य भी हमारे ग्रह के प्राकृतिक संसाधनों पर भारी मांग डालते रहते हैं। ईंधन और ऊर्जा के अनियंत्रित उपयोग के कारण कई गैर-नवीकरणीय संसाधन समाप्त हो रहे हैं। भोजन और पानी की कमी से दुनिया के कई हिस्से भी पीड़ित हैं। जनसंख्या की वृद्धि हमारे पहले से ही सीमित संसाधनों पर बड़ी मांग रखती है। पृथ्वी पर पर्यावरण वैश्विक जनसंख्या की वृद्धि से पीड़ित है। संसाधनों और जैव विविधता की कमी, अपशिष्ट का उत्पादन, और प्राकृतिक आवास को नष्ट करना गंभीर समस्याएं हैं जिन्हें यह सुनिश्चित करने के लिए संबोधित किया जाना चाहिए कि पृथ्वी पर जीवन अगली शताब्दी तक टिकाऊ रहेगा

कुंजी शब्द - औद्योगिक उन्नति, भूमि और मिट्टी का क्षरण, ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन, वायु और जल प्रदूषण, वनों की कटाई, भौतिक पर्यावरण, बढ़ती आबादी, भौतिक पर्यावरण

-----X-----

## परिचय

1800 में पृथ्वी की जनसंख्या 1 बिलियन थी, जिसने मानव इतिहास के सभी को उस निशान तक पहुंचने में मदद की। केवल 2 शताब्दियों के बाद, वैश्विक जनसंख्या 6 बिलियन है, जिसमें से आधे शहरों में रहते हैं। इस जनसंख्या विस्फोट का पर्यावरण पर जो प्रभाव पड़ा है, वह वैसा ही है, जैसा कि ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में बदलाव, मिट्टी के कटाव की दर और प्रजातियों के विलुप्त होने के रूप में देखा गया है। प्रकृति भंडार में वर्तमान में विश्व स्तर पर लगभग 10% भूमि क्षेत्र शामिल हैं, लेकिन अधिकांश छोटे हैं, अन्य भंडार से काट दिए गए हैं, और जबरदस्त मानव दबाव के अधीन हैं। पर्यावरणीय प्रभाव को मापने के लिए जनसंख्या का आकार स्पष्ट रूप से एक महत्वपूर्ण कारक है। इस समीकरण में अन्य गुणक संपन्नता का स्तर हैं - प्रति व्यक्ति खपत और खपत की इकाई के रूप में मापा जाता है, ऊर्जा, भोजन और अन्य संसाधनों की आपूर्ति करने के लिए उपयोग की जाने वाली प्रौद्योगिकियों में परिलक्षित होता है। जनसंख्या वृद्धि, खपत, अति प्रयोग, अपव्यय और संसाधनों के दुरुपयोग के संयुक्त प्रभावों ने जीवन को बनाए रखने के लिए पृथ्वी की क्षमता को कम कर दिया है। इसीलिए आज मानव जनसंख्या का अध्ययन और नियंत्रण बहुत महत्वपूर्ण है

## मानव अतिसंवेदनशीलता

डेविड एटनबरो ने ग्रह पर मानव आबादी के स्तर को अन्य सभी पर्यावरणीय समस्याओं के गुणक के रूप में वर्णित किया। 2013 में, उन्होंने मानवता को "पृथ्वी पर एक प्लेग" के रूप में वर्णित किया जिसे जनसंख्या वृद्धि सीमित करके नियंत्रित किया जाना चाहिए।

कुछ गहरे पारिस्थितिक विज्ञानी, जैसे कि कट्टरपंथी विचारक और ध्रुवीय पेंटी लिंकोला, पूरे जीवमंडल के लिए खतरे के रूप में मानव अतिसंवेदनशीलता को देखते हैं। 2017 में, दुनिया भर में 15,000 से अधिक वैज्ञानिकों ने मानवता को दूसरी चेतावनी जारी की, जिसमें जोर दिया गया कि तेजी से मानव जनसंख्या वृद्धि "कई पारिस्थितिकीय और यहां तक कि सामाजिक खतरों के पीछे प्राथमिक चालक है।"

ग्रह पर मानवता का समग्र प्रभाव कई कारकों से प्रभावित होता है, न केवल लोगों की कच्ची संख्या। उनकी जीवनशैली (समग्र समृद्धि और संसाधन उपयोग सहित) और प्रदूषण जो वे उत्पन्न करते हैं (कार्बन पदचिह्न सहित) समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। 2008 में, द न्यूयॉर्क टाइम्स ने कहा कि दुनिया के विकसित देशों के निवासियों ने विकासशील दुनिया की तुलना में लगभग 32 गुना अधिक दर पर तेल और धातु जैसे संसाधनों का उपभोग किया है, जो मानव आबादी का बहुमत बनाते हैं।

अमीर पश्चिमी देश अब ग्रह के संसाधनों को खत्म कर रहे हैं और अभूतपूर्व दर पर अपने पारिस्थितिकी तंत्र को नष्ट कर रहे हैं। हम अपने सेलफोन के लिए दुर्लभ पृथ्वी खनिजों को पाने के लिए सेरेनेगी में राजमार्गों का निर्माण करना चाहते हैं। हम समुद्र से सभी मछलियों को पकड़ते हैं, मूंगा चट्टानों को तोड़ते हैं और कार्बन डाइऑक्साइड को वायुमंडल में डाल देते हैं। हमने एक प्रमुख विलुप्त होने की घटना शुरू की है एक अरब आबादी की एक विश्व जनसंख्या का कुल समर्थक जीवन प्रभाव होगा। यह कई सहस्राब्दी के लिए समर्थित हो सकता है और हमारे वर्तमान अनियंत्रित विकास और अचानक पतन की संभावना के मुकाबले लंबी अवधि में कई और मानव जीवन को बनाए रख सकता है यदि हर कोई अमेरिकी स्तर पर संसाधनों का उपभोग करता है वृ जो दुनिया की इच्छा है वृ आपको एक और चार की आवश्यकता होगी या पांच पृथ्वी। हम अपने ग्रह के जीवन समर्थन प्रणाली को बर्बाद कर रहे हैं।

### भौतिक पर्यावरण पर जनसंख्या वृद्धि के प्रभाव

भौतिक पर्यावरण का अर्थ है - निर्जीव पर्यावरण या भूमि, वायु, जल, मिट्टी और खनिज। मानव जनसंख्या की वृद्धि के कारण भौतिक संसाधनों के उपयोग, अति प्रयोग और दुरुपयोग में कई गुना वृद्धि हुई। जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है, अधिक जनसंख्या का मतलब है कि खाना खाने के लिए अधिक मुँह, जिसे अधिक कृषि उत्पादन की आवश्यकता होती है। वनों को साफ करके और गीली भूमि, तालाबों और ग्रीन बेल्टों को पुनः प्राप्त करके अधिक खेती योग्य भूमि उपलब्ध कराई गई है। उन्नत कृषि में अधिक पानी, अधिक उर्वरकों और अधिक कीटनाशकों के उपयोग की आवश्यकता होती है। उर्वरकों और कीटनाशकों के आवेदन से मिट्टी बाँझ हो जाती है। जंगलों की सफाई के अपने गंभीर प्रभाव हैं और पूरे पर्यावरण पर असंतुलन हो गया है। अधिक जनसंख्या का मतलब घरों के निर्माण और अधिक उपभोक्ता वस्तुओं की उपलब्धता के लिए अधिक स्थान है। इसमें परिवहन के अधिक साधनों, जीवाश्म ईंधन की अधिक खपत और वायु, भूमि और जल के अधिक प्रदूषण की भी आवश्यकता होती है। इस प्रकार जनसंख्या के बढ़ने से वायु, भूमि और जल का प्रदूषण होता है। विभिन्न प्रकार के प्रदूषण भौतिक वातावरण में कई समस्याओं का कारण बन रहे हैं जो जैविक पर्यावरण को और अधिक गंभीर रूप से प्रभावित कर रहे हैं

### वायु और जल प्रदूषण

जैसे-जैसे आबादी बढ़ती है, अधिक से अधिक जंगल साफ हो जाते हैं। वनों की कटाई के दो सबसे आम कारण उद्योगों में ईंधन के रूप में रहने और लकड़ी का उपयोग करने के लिए लोगों की बढ़ती

संख्या के लिए घर बनाना है। नतीजतन, पेड़ जो प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया के माध्यम से वायु प्रदूषण को कम करने में हमारी मदद करते हैं, वे ऐसा करने में सक्षम नहीं हैं। दुनिया भर में पर्यावरणविदों को हाल ही में परेशान करने वाले प्रमुख मुद्दों में से एक ग्लोबल वार्मिंग है। ग्रीनहाउस में कांच की तरह, कार्बन मोनोऑक्साइड जैसी गैसों सूर्य के प्रकाश को स्वीकार करती हैं, लेकिन नीचे की ओर से नीचे की ओर गर्मी को प्रतिबिंबित करती हैं, जो पृथ्वी के वातावरण में गर्मी को फंसाती है। इसे ग्रीनहाउस प्रभाव कहा जाता है। बढ़ती जनसंख्या द्वारा वायु प्रदूषण केवल पर्यावरणीय क्षति नहीं है। आजकल जनसंख्या विस्फोट के कारण जल प्रदूषण भी बढ़ती समस्याओं में से एक है। पानी को जीवन का सार माना जाता है। जैसा कि वायु प्रदूषण के मामले में, बढ़ती आबादी कारखानों की बढ़ती संख्या के लिए कहती है। इन कारखानों से जल प्रदूषण सहित विभिन्न प्रकार के प्रदूषण होते हैं। साथ ही, भारत एक कृषि प्रधान देश होने के नाते, जल प्रदूषण कृषि के लिए उपयोग किए जाने वाले कीटनाशकों से भी होता है। जैसा कि हम देख सकते हैं, बढ़े हुए जनसंख्या का आकार बढ़े हुए प्रदूषण की ओर ले जा रहा है, जो आगे चलकर स्वयं मनुष्यों के लिए अधिक शत्रुतापूर्ण वातावरण का कारण बन रहा है।

### वनों की कटाई

वन भारत का एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन हैं। बाढ़ के खिलाफ उनका मध्यम प्रभाव है और इस प्रकार वे मिट्टी के कटाव की रक्षा करते हैं। पर्यावरण संतुलन और जीवन समर्थन प्रणाली को प्रभावित करके पर्यावरण की गुणवत्ता को बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं (मिट्टी के क्षरण की जाँच, मिट्टी की उर्वरता बनाए रखना, पानी का संरक्षण करना, जल चक्रों और बाढ़ को नियंत्रित करना, वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड और ऑक्सीजन सामग्री को संतुलित करना आदि। रिकॉर्ड वन क्षेत्र में 76.52 मिलियन वर्ग किलोमीटर का वन कवर है, जबकि केवल 63.34 मिलियन वर्ग किलोमीटर में ही वास्तविक वन कवर के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। वर्ष 1997 में, 1993 की तुलना में, कुल वन आवरण में 6710 वर्ग किलोमीटर की कमी आई है। किलोमीटर। वे राज्य जिनमें वन आच्छादन में उल्लेखनीय गिरावट देखी गई है, वे आंध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश हैं। निरंतर वनों की कटाई ने हमें एक बड़े पारिस्थितिक और सामाजिक-आर्थिक संकट के साथ आमने-सामने ला खड़ा किया है।

### कृषि

कृषि का पर्यावरणीय प्रभाव दुनिया भर में नियोजित कृषि प्रथाओं की विस्तृत विविधता के आधार पर भिन्न होता है। अंततः,

पर्यावरणीय प्रभाव किसानों द्वारा उपयोग की जाने वाली प्रणाली के उत्पादन प्रथाओं पर निर्भर करता है। पर्यावरण और खेती प्रणाली में उत्सर्जन के बीच संबंध अप्रत्यक्ष है, क्योंकि यह वर्षा और तापमान जैसे अन्य जलवायु चर पर भी निर्भर करता है।

पर्यावरणीय प्रभाव के दो प्रकार के संकेतक हैं: "साधन-आधारित", जो कि किसान के उत्पादन विधियों और "प्रभाव-आधारित" पर आधारित है, जो कि कृषि व्यवस्था पर खेती के तरीकों या पर्यावरण के उत्सर्जन पर प्रभाव डालता है। साधन-आधारित संकेतक का एक उदाहरण भूजल की गुणवत्ता होगी जो मिट्टी पर लागू नाइट्रोजन की मात्रा से प्रभावित होता है। भूजल में नाइट्रेट के नुकसान को दर्शाते हुए एक संकेतक प्रभाव-आधारित होगा।

कृषि के पर्यावरणीय प्रभाव में मिट्टी, पानी, वायु, पशु और मिट्टी विविधता, पौधों और भोजन से विभिन्न कारक शामिल हैं। कृषि से संबंधित कुछ पर्यावरणीय मुद्दे जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, अनुवांशिक इंजीनियरिंग, सिंचाई की समस्याएं, प्रदूषण, मिट्टी में गिरावट, और अपशिष्ट हैं।

### मछली पकड़ना

मछली पकड़ने के पर्यावरणीय प्रभाव को उन मुद्दों में विभाजित किया जा सकता है जिनमें मछली पकड़ने की उपलब्धता शामिल है, जैसे ओवरफिशिंग, टिकाऊ मत्स्य पालन, और मत्स्य प्रबंधन और ऐसे मुद्दों जिनमें पर्यावरण के अन्य तत्वों पर मछली पकड़ने के प्रभाव शामिल हैं, जैसे कि कोरल रीफ जैसे आवास के विनाश और विनाश।

ये संरक्षण मुद्दे समुद्री संरक्षण का हिस्सा हैं, और मत्स्य विज्ञान विज्ञान कार्यक्रमों में संबोधित हैं। पकड़े जाने के लिए कितनी मछलियाँ उपलब्ध हैं और मानवता की पकड़ उन्हें पकड़ने की इच्छा के बीच एक बढ़ता अंतर है, एक ऐसी समस्या जो दुनिया की आबादी बढ़ती है, बदतर हो जाती है।

अन्य पर्यावरणीय मुद्दों के समान, मछुआरों के बीच संघर्ष हो सकता है जो अपनी आजीविका और मत्स्य वैज्ञानिकों के लिए मछली पकड़ने पर निर्भर करते हैं, जो महसूस करते हैं कि यदि भविष्य में मछली की आबादी टिकाऊ है तो कुछ मत्स्यपालन को कम या बंद करना चाहिए।

जर्नल साइंस ने नवंबर 2006 में चार साल के अध्ययन को प्रकाशित किया, जिसमें भविष्यवाणी की गई कि मौजूदा रुझानों पर, दुनिया 2048 में जंगली पकड़े गए समुद्री खाने से बाहर चली जाएगी। वैज्ञानिकों ने कहा कि गिरावट ओवरफिशिंग, प्रदूषण और अन्य पर्यावरण का परिणाम था ऐसे कारक जो मछुआरों की

आबादी को कम कर रहे थे, उसी समय उनके पारिस्थितिक तंत्र को अपमानित किया जा रहा था। फिर भी विश्लेषण ने मूलभूत रूप से त्रुटिपूर्ण होने के रूप में आलोचना से मुलाकात की है, और कई मत्स्य प्रबंधन अधिकारी, उद्योग प्रतिनिधियों और वैज्ञानिकों ने निष्कर्षों को चुनौती दी है, हालांकि बहस जारी है। टोंगा, संयुक्त राज्य अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड जैसे कई देशों, और अंतरराष्ट्रीय प्रबंधन निकायों ने समुद्री संसाधनों का उचित प्रबंधन करने के लिए कदम उठाए हैं।

### सिंचाई

सिंचाई के पर्यावरणीय प्रभाव में सिंचाई के परिणामस्वरूप सिंचाई योजना के पूंछ के अंत और डाउनस्ट्रीम पर प्राकृतिक और सामाजिक परिस्थितियों पर आने वाले प्रभावों के परिणामस्वरूप मिट्टी और पानी की मात्रा और गुणवत्ता में परिवर्तन शामिल हैं।

मिट्टी और पानी की गुणवत्ता पर प्रभाव अप्रत्यक्ष और जटिल हैं, और प्राकृतिक, पारिस्थितिक और सामाजिक-आर्थिक स्थितियों पर बाद के प्रभाव जटिल हैं। कुछ में, लेकिन सभी मामलों में, पानी लॉगिंग और मिट्टी का salinization परिणाम हो सकता है। हालांकि, रूट जोन के आसपास से अतिरिक्त लवण लीच करके मिट्टी के salinization को दूर करने के लिए, मिट्टी के जल निकासी के साथ, सिंचाई का भी उपयोग किया जा सकता है।

सिंचाई को ट्यूब (ट्यूब) कुओं द्वारा भूजल निकालने के लिए भी किया जा सकता है। एक जलविद्युत परिणाम के रूप में यह पाया जाता है कि पानी का स्तर उतरता है। प्रभाव पानी खनन, भूमि मिट्टी की कमी, और तट के साथ, नमकीन पानी घुसपैठ हो सकता है।

सिंचाई परियोजनाओं के बड़े लाभ हो सकते हैं, लेकिन नकारात्मक दुष्प्रभावों को अक्सर अनदेखा किया जाता है। उच्च शक्ति वाले पानी पंप, बांध और पाइपलाइन जैसी कृषि सिंचाई प्रौद्योगिकियों में जलीय जल संसाधनों जैसे कि जलीय जल, झीलों और नदियों के बड़े पैमाने पर कमी के लिए जिम्मेदार हैं। ताजे पानी, झीलों, नदियों और खाड़ियों के इस विशाल मोड़ के परिणामस्वरूप सूखे, गंभीर रूप से आसपास के पारिस्थितिक तंत्र को बदलना या तनाव देना, और कई जलीय प्रजातियों के विलुप्त होने में योगदान देना है।

### कृषि भूमि हानि और मिट्टी का कटाव

लाल और स्टीवर्ट ने प्रति वर्ष 12 मिलियन हेक्टेयर में गिरावट और त्याग से कृषि भूमि के वैश्विक नुकसान का अनुमान

लगाया। इसके विपरीत, शेरर के अनुसार, ग्लासोड (संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के तहत मानव-प्रेरित मृदा अवक्रमण के वैश्विक आकलन) ने अनुमान लगाया है कि 1 9 40 के दशक के मध्य से 6 मिलियन हेक्टेयर कृषि भूमि मिट्टी में गिरावट के कारण खो गई थी, और उसने ध्यान दिया कि यह परिमाण दुडल और रोजानोव एट अल द्वारा पिछले अनुमानों के समान है। इस तरह के नुकसान न केवल मिट्टी के कटाव के लिए जिम्मेदार हैं, बल्कि salinization, पोषक तत्वों और कार्बनिक पदार्थ, अम्लीकरण, salinization, पानी लॉगिंग और subsidence के नुकसान के लिए भी जिम्मेदार हैं। मानव प्रेरित भूमि गिरावट शुष्क क्षेत्रों में विशेष रूप से गंभीर होती है। मिट्टी के गुणों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, ओल्डमैन ने अनुमान लगाया कि लगभग 1 9 मिलियन वर्ग किलोमीटर वैश्विक भूमि क्षेत्र में गिरावट आई है। हैय ड्रेगन और चै, जिसमें वनस्पति कवर के साथ-साथ मिट्टी में गिरावट शामिल थी, अनुमान लगाया गया कि दुनिया के सूखे क्षेत्रों में लगभग 36 मिलियन वर्ग किलोमीटर गिरावट आई है। कृषि भूमि के अनुमानित नुकसान के बावजूद, 1 9 61 से 2012 तक विश्व स्तर पर फसल उत्पादन में उपयोग की जाने वाली कृषि भूमि की मात्रा में 9% की वृद्धि हुई है, और 2012 में 1.396 बिलियन हेक्टेयर होने का अनुमान है।

वैश्विक औसत मिट्टी के क्षरण दर को उच्च माना जाता है, और परंपरागत फसल भूमि पर क्षरण दर आमतौर पर मिट्टी के उत्पादन दर के अनुमानों से अधिक होती है, आमतौर पर परिमाण के क्रम से अधिक होती है। अमेरिका में, यूएस एनआरसीएस (प्राकृतिक संसाधन संरक्षण सेवा) द्वारा क्षरण अनुमानों के लिए नमूना सांख्यिकीय रूप से आधारित है, और अनुमान सार्वभौमिक मृदा नुकसान समीकरण और पवन क्षरण समीकरण का उपयोग करता है। 2010 के लिए, गैर-संघीय अमेरिकी भूमि पर शीट, रिल और वायु कटाव द्वारा सालाना औसत मिट्टी का नुकसान फसल भूमि पर 10.7 टन धू हेक्टेयर और चरागाह भूमि पर 1.9 टन धू हेक्टेयर होने का अनुमान लगाया गया था। अमेरिकी फसल भूमि पर औसत मिट्टी का क्षरण दर 1 9 82 से लगभग 34% कम हो गया था। गेहूं और जौ जैसे अनाज के उत्पादन के लिए उपयोग की जाने वाली उत्तरी अमेरिकी फसल भूमि पर अब तक और कम-से-कम प्रथाएं तेजी से आम हो गई हैं। अनगिनत फसल भूमि पर, हाल ही में औसत कुल मिट्टी का नुकसान प्रति वर्ष 2.2 टन धू हेक्टेयर रहा है। परंपरागत खेती का उपयोग करके कृषि के मुकाबले, यह सुझाव दिया गया है कि, क्योंकि कृषि तक मिट्टी के उत्पादन दर के करीब कृषि दर कम नहीं करती है, यह स्थायी कृषि के लिए आधार प्रदान कर सकती है।

## मांस उत्पादन

मांस उत्पादन से जुड़े पर्यावरणीय प्रभावों में जीवाश्म ऊर्जा, पानी और भूमि संसाधन, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन, और कुछ मामलों में, वर्षावन समाशोधन, जल प्रदूषण और प्रजाति के खतरे का उपयोग अन्य प्रतिकूल प्रभावों के बीच शामिल है। Steinfeld एट अल। एफएओ का अनुमान है कि 18% ग्लोबल एंथ्रोपोजेनिक जीएचजी (ग्रीन हाउस गैस) उत्सर्जन (100 साल के कार्बन डाइऑक्साइड समकक्ष के रूप में अनुमानित) पशुधन उत्पादन के साथ किसी भी तरह से जुड़े हुए हैं। एक हालिया एफएओ विश्लेषण का अनुमान है कि 2011 में पशुधन समेत सभी कृषि वैश्विक मानव एंथ्रोपोजेनिक जीएचजी उत्सर्जन के लिए 100 साल के कार्बन डाइऑक्साइड समकक्षों के रूप में व्यक्त की गई थी। इसी तरह, जलवायु परिवर्तन पर अंतर सरकारी पैनेल ने अनुमान लगाया है कि 2005 और 2010 में पशुधन क्षेत्र समेत सभी कृषि के लिए वैश्विक मानववंशीय जीएचजी उत्सर्जन (100 साल के कार्बन डाइऑक्साइड समकक्षों के रूप में व्यक्त) के लगभग 10% से 12% असाइन किए गए थे। पशुधन के कारण राशि कृषि के कारण राशि का कुछ अंश होना चाहिए। मांस उत्पादन के कारण राशि पशुधन के कारण उसमें से कुछ अंश है। एफएओ डेटा इंगित करता है कि मांस 2011 में वैश्विक पशुधन उत्पाद टन के 26% के लिए जिम्मेदार था। हालांकि, कई अनुमान कुछ उत्सर्जन के विभिन्न क्षेत्रीय असाइनमेंट का उपयोग करते हैं। आईएफसी और वर्ल्ड बैंक के साथ पर्यावरण विशेषज्ञ जेफ अनहांग और रॉबर्ट गुडलैंड ने जीएचजी को पशुधन से 51% पर रखा है, यह बताते हुए कि एफएओ रिपोर्ट प्रत्येक वर्ष उत्पादित 8,76 9 मीट्रिक टन श्वसन सीओ<sub>2</sub> के लिए जिम्मेदार नहीं है, मीथेन उत्पादन और जमीन के नीचे पशुधन से जुड़े उपयोग, और जानवरों और पशु उत्पादों के कत्लेआम, प्रसंस्करण, पैकेजिंग, भंडारण और परिवहन से संबंधित उत्सर्जन को उचित रूप से वर्गीकृत करने में विफल रहे।

काफी पानी का उपयोग मांस उत्पादन से जुड़ा हुआ है, ज्यादातर वनस्पति के उत्पादन में उपयोग किए जाने वाले पानी की वजह से फीड प्रदान करता है। पशुधन और मांस उत्पादन से जुड़े पानी के उपयोग के कई प्रकाशित अनुमान हैं, लेकिन ऐसे उत्पादन के लिए असाइन किए जाने वाले पानी के उपयोग की मात्रा शायद ही कभी अनुमानित है। उदाहरण के लिए, "हरा पानी" उपयोग मिट्टी के पानी के वाष्पीकरण का उपयोग है जो सीधे वर्षा से प्रदान किया गया है और "ग्रीन वॉटर" का अनुमान लगाया गया है कि ग्लोबल गोमांस के मवेशी उत्पादन के "पानी के निशान" का 9 4% और रंगभूमि पर, गोमांस उत्पादन से जुड़े 99.5% पानी का उपयोग "हरी पानी" है। हालांकि, यह गोमांस उत्पादन के लिए संबंधित रंगभूमि हरी पानी के उपयोग को असाइन करने के लिए

भ्रामक होगा, आंशिक रूप से क्योंकि पशुधन की अनुपस्थिति में भी वाष्पीकरण का उपयोग होता है। यहां तक कि जब मवेशी मौजूद होते हैं, तब भी उस संबंधित पानी के अधिकांश उपयोग स्थलीय पर्यावरणीय मूल्यों के उत्पादन के लिए असाइन किए जाने योग्य माना जा सकता है, क्योंकि यह जड़ नियंत्रण और अवशोषण बायोमास उत्पन्न करता है जो क्षरण नियंत्रण के लिए महत्वपूर्ण है, मिट्टी की संरचना का स्थिरीकरण, पोषक चक्रवात, कार्बन अनुक्रमण, कई प्राथमिकताओं का समर्थन उपभोक्ताओं, जिनमें से कई उच्च उष्णकटिबंधीय स्तरों का समर्थन करते हैं, आदि। पानी के पानी (सतह और भूजल स्रोतों से) का उपयोग पशुओं के पानी के लिए किया जाता है, और कुछ मामलों में भी फोरेज और फीड फसलों की सिंचाई के लिए उपयोग किया जाता है। जबकि अमेरिका में सभी सिंचाई (वाहन में हानि सहित) का अनुमान है कि लगभग 38% अमेरिका ने ताजे पानी के उपयोग को वापस ले लिया है, पशुधन फीड और फोरेज के उत्पादन के लिए सिंचाई के पानी का अनुमान लगभग 9% है पशुधन क्षेत्र के लिए अन्य निकाले गए ताजे पानी के उपयोग (पीने के लिए, सुविधाओं के धोने आदि) का अनुमान लगभग 0.7% है। पशुधन क्षेत्र से गैर-मांस उत्पादों की पूर्वनिर्धारितता के कारण केवल इस पानी के उपयोग का कुछ अंश मांस उत्पादन के लिए असाइन किया जा सकता है।

खाद और घुसपैठ करने वाले पानी में खाद और अन्य पदार्थों द्वारा पानी की गुणवत्ता में कमी एक चिंता है, खासकर जहां गहन पशुधन उत्पादन किया जाता है। अमेरिका में, 32 उद्योगों की तुलना में, पशुधन उद्योग को स्वच्छ जल अधिनियम और स्वच्छ वायु अधिनियम के अनुसार पर्यावरणीय नियमों के अनुपालन का अपेक्षाकृत अच्छा रिकॉर्ड पाया गया था, लेकिन बड़े पशुधन संचालन से प्रदूषण के मुद्दे कभी-कभी गंभीर हो सकते हैं उल्लंघन होता है। अमेरिकी पर्यावरण संरक्षण एजेंसी द्वारा विभिन्न उपायों का सुझाव दिया गया है, जो जल विद्युत गुणवत्ता और रिपेरियन वातावरण में पशुधन को कम करने में मदद कर सकते हैं।

यूएसडीए अध्ययन के आंकड़ों से पता चलता है कि, 2002 में, संयुक्त राज्य अमेरिका में लगभग 0.6% गैर-सौर ऊर्जा उपयोग मांस उत्पादन करने वाले पशुधन और कुक्कुट के उत्पादन के लिए जिम्मेदार था। इस अनुमान में उत्पादन में प्रयुक्त ऊर्जा शामिल है, जैसे खाद्य उत्पादन के लिए उर्वरक के निर्माण और परिवहन में उपयोग की जाने वाली ऊर्जा। (गैर-सौर ऊर्जा निर्दिष्ट है, क्योंकि प्रकाश संश्लेषण और घास सुखाने जैसी प्रक्रियाओं में सौर ऊर्जा का उपयोग किया जाता है।)

## ऊर्जा उद्योग

ऊर्जा कटाई और खपत का पर्यावरणीय प्रभाव विविध है। हाल के वर्षों में विभिन्न अक्षय ऊर्जा स्रोतों के बढ़ते व्यावसायीकरण की दिशा में एक प्रवृत्ति रही है।

## बायोडीजल

बायोडीजल के पर्यावरणीय प्रभाव में ऊर्जा उपयोग, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन और कुछ अन्य प्रकार के प्रदूषण शामिल हैं। अमेरिकी कृषि विभाग और अमेरिकी ऊर्जा विभाग द्वारा संयुक्त जीवन चक्र विश्लेषण में पाया गया कि बसों में पेट्रोलियम डीजल के लिए 100% बायोडीजल को प्रतिस्थापित करने से पेट्रोलियम की जीवन चक्र खपत 95% कम हो गई। बायोडीजल ने कार्बन डाइऑक्साइड के शुद्ध उत्सर्जन को पेट्रोलियम डीजल की तुलना में 78.45% तक घटा दिया। शहरी बसों में, बायोडीजल ने पेट्रोलियम डीजल के उपयोग से जुड़े जीवन चक्र उत्सर्जन के सापेक्ष 32 प्रतिशत, कार्बन मोनोऑक्साइड उत्सर्जन 35 प्रतिशत, और सल्फर ऑक्साइड उत्सर्जन के उत्सर्जन को कम किया। हाइड्रोकार्बन का जीवन चक्र उत्सर्जन 35% अधिक था और विभिन्न नाइट्रोजन ऑक्साइड (एनओएक्स) का उत्सर्जन बायोडीजल के साथ 13.5% अधिक था। तहवददम नेशनल लेबोरेटरी द्वारा लाइफ चक्र विश्लेषण ने जीवाश्म डीजल उपयोग की तुलना में जीवाश्म ऊर्जा के उपयोग को कम किया है और बायोडीजल के साथ ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम किया है। विभिन्न वनस्पति तेलों (जैसे कैनोला या सोयाबीन तेल) से प्राप्त बायोडीजल पेट्रोलियम डीजल की तुलना में पर्यावरण में आसानी से बायोडिग्रेडेबल है।

## कोयला खनन

कोयला खनन और -बर्निंग का पर्यावरणीय प्रभाव विविध है। 1990 में अमेरिकी कांग्रेस द्वारा पारित कानून को संयुक्त राज्य पर्यावरण संरक्षण एजेंसी (ईपीए) को कोयले से निकाले गए बिजली संयंत्रों से जहरीले वायु प्रदूषण को कम करने की योजना जारी करने की आवश्यकता थी। देरी और मुकदमेबाजी के बाद, ईपीए की रिपोर्ट जारी करने के लिए अब 16 मार्च, 2011 को अदालत द्वारा लगाई गई समयसीमा है।

## विद्युत उत्पादन

बिजली उत्पादन का पर्यावरणीय प्रभाव महत्वपूर्ण है क्योंकि आधुनिक समाज बड़ी मात्रा में विद्युत शक्ति का उपयोग करता है। यह शक्ति आम तौर पर बिजली संयंत्रों में उत्पन्न होती है

जो किसी अन्य प्रकार की ऊर्जा को बिजली में परिवर्तित करती हैं। इस तरह की प्रत्येक प्रणाली के फायदे और नुकसान होते हैं, लेकिन उनमें से कई पर्यावरणीय चिंताओं को जन्म देते हैं।

### परमाणु ऊर्जा

परमाणु ऊर्जा के परिणामों पर पर्यावरणीय प्रभाव परमाणु ईंधन चक्र प्रक्रियाओं से खनन, प्रसंस्करण, परिवहन और ईंधन और रेडियोधर्मी ईंधन अपशिष्ट भंडारण शामिल है। रिहायशी रेडियोसोटोप मानव आबादी, जानवरों और पौधों के लिए एक स्वास्थ्य खतरा पैदा करते हैं क्योंकि रेडियोधर्मी कण विभिन्न संचरण मार्गों के माध्यम से जीवों में प्रवेश करते हैं।

### तेल शेल उद्योग

तेल शेल उद्योग के पर्यावरणीय प्रभाव में भूमि उपयोग, अपशिष्ट प्रबंधन, और तेल शेल के निष्कर्षण और प्रसंस्करण के कारण पानी और वायु प्रदूषण जैसे मुद्दों पर विचार शामिल है। तेल शेल जमा की सतह खनन खुले गड्ढे खनन के सामान्य पर्यावरणीय प्रभाव का कारण बनता है। इसके अलावा, दहन और थर्मल प्रसंस्करण अपशिष्ट सामग्री उत्पन्न करता है, जिसे कार्बन डाइऑक्साइड, एक प्रमुख ग्रीनहाउस गैस सहित कार्बन डाइऑक्साइड सहित हानिकारक वायुमंडलीय उत्सर्जन का निपटान किया जाना चाहिए। प्रायोगिक इन-सीटू रूपांतरण प्रक्रियाओं और कार्बन कैप्चर और स्टोरेज टेक्नोलॉजीज भविष्य में इनमें से कुछ चिंताओं को कम कर सकती हैं, लेकिन भूजल के प्रदूषण जैसे अन्य लोगों को बढ़ा सकती हैं।

### पेट्रोलियम

पेट्रोलियम का पर्यावरणीय प्रभाव अक्सर नकारात्मक होता है क्योंकि यह लगभग सभी प्रकार के जीवन के लिए जहरीला है। पेट्रोलियम, तेल या प्राकृतिक गैस के लिए एक आम शब्द, वर्तमान समाज के लगभग सभी पहलुओं से निकटता से जुड़ा हुआ है, खासकर दोनों घरों और वाणिज्यिक गतिविधियों के लिए परिवहन और हीटिंग के लिए।

### जलाशयों

जलाशयों का पर्यावरणीय प्रभाव हमेशा बढ़ती जांच के अधीन आ रहा है क्योंकि पानी और ऊर्जा की बढ़ती मांग और जलाशयों की संख्या और आकार बढ़ता है। डैम्स और जलाशयों का उपयोग पीने के पानी की आपूर्ति, जलविद्युत बिजली उत्पन्न करने, सिंचाई के लिए पानी की आपूर्ति में वृद्धि, मनोरंजक अवसर और बाढ़ नियंत्रण प्रदान करने के लिए किया जा सकता है। हालांकि,

कई जलाशयों के निर्माण के दौरान और बाद में प्रतिकूल पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों की पहचान भी की गई है।

### पवन ऊर्जा

पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों के पर्यावरणीय प्रभाव की तुलना में, पवन ऊर्जा का पर्यावरणीय प्रभाव अपेक्षाकृत मामूली है। पवन संचालित विद्युत उत्पादन जीवाश्म ईंधन ऊर्जा स्रोतों के विपरीत, कोई ईंधन नहीं खपत करता है, और कोई वायु प्रदूषण नहीं निकलता है। पवन ऊर्जा संयंत्र बनाने के लिए उपयोग की जाने वाली सामग्रियों का निर्माण और परिवहन करने के लिए खपत ऊर्जा कुछ महीनों के भीतर संयंत्र द्वारा उत्पादित नई ऊर्जा के बराबर होती है। जबकि एक पवन फार्म भूमि के एक बड़े क्षेत्र को कवर कर सकता है, कृषि जैसे कई भूमि उपयोग संगत हैं, टर्बाइन नींव और बुनियादी ढांचे के केवल छोटे क्षेत्रों के उपयोग के लिए अनुपलब्ध है।

पवन टर्बाइनों पर पक्षी और बल्ले की मृत्यु दर की रिपोर्टें हैं, क्योंकि अन्य कृत्रिम संरचनाएं हैं। विशिष्ट परिस्थितियों के आधार पर पारिस्थितिकीय प्रभाव का स्तर महत्वपूर्ण हो सकता है या नहीं भी हो सकता है। वन्यजीवन की मौत की रोकथाम और शमन, और पीट बोगों की सुरक्षा, पवन टर्बाइनों के बैठने और संचालन को प्रभावित करती है।

पवन टर्बाइन के बहुत करीब रहने वाले लोगों पर शोर के प्रभावों के बारे में विवादित रिपोर्टें हैं।

### प्रकाश प्रदूषण

रात में कृत्रिम प्रकाश सबसे स्पष्ट शारीरिक परिवर्तनों में से एक है जिसे मनुष्यों ने जीवमंडल में बनाया है, और अंतरिक्ष से निरीक्षण के लिए प्रदूषण का सबसे आसान रूप है। कृत्रिम प्रकाश का मुख्य पर्यावरणीय प्रभाव प्रकाश स्रोत के उपयोग के रूप में एक सूचना स्रोत (ऊर्जा स्रोत के बजाय) के रूप में होता है। दृश्य शिकारी की शिकार दक्षता आम तौर पर कृत्रिम प्रकाश के तहत बढ़ती है, शिकारियों शिकार इंटरैक्शन बदलती है। कृत्रिम प्रकाश फैलाव, अभिविन्यास, प्रवासन, और हार्मोन के स्तर को भी प्रभावित करता है, जिसके परिणामस्वरूप सर्कडियन लय बाधित हो जाता है।

### विनिर्मित उत्पाद

#### साफ करने के यंत्र

सफाई एजेंटों का पर्यावरणीय प्रभाव विविध है। हाल के वर्षों में, इन प्रभावों को कम करने के लिए उपाय किए गए हैं।

## नैनो

नैनो टेक्नोलॉजी के पर्यावरणीय प्रभाव को दो पहलुओं में विभाजित किया जा सकता है" पर्यावरण में सुधार करने के लिए नैनो टेक्नोलॉजील नवाचारों की संभावना, और संभावित रूप से उपन्यास के प्रदूषण की संभावना है जो पर्यावरण में जारी होने पर नैनो टेक्नोलॉजिकल सामग्री का कारण बन सकती है। चूंकि नैनो टेक्नोलॉजी एक उभरता हुआ क्षेत्र है, इस बात के बारे में बड़ी बहस है कि नैनोमटेरियल्स के औद्योगिक और वाणिज्यिक उपयोग किस हद तक जीवों और पारिस्थितिक तंत्र को प्रभावित करेंगे।

## चमड़ा

चमड़ा कुछ पर्यावरणीय प्रभाव पैदा करता है, विशेष रूप से इसके कारण"

## मवेशी पालन के कार्बन पद चिह्न

कमाना प्रक्रिया में रसायनों का उपयोग (उदाहरण के लिए, क्रोमियम, फॉर्मिक एसिड, पारा और सॉल्वेंट्स) परिवर्तन प्रक्रिया के कारण वायु प्रदूषण (डेलीयरिंग के दौरान हाइड्रोजन सल्फाइड और डेलीमिंग के दौरान अमोनिया, विलायक वाष्प)

## रंग

पेंट का पर्यावरणीय प्रभाव विविध है। पारंपरिक पेंटिंग सामग्री और प्रक्रियाओं में पर्यावरण पर हानिकारक प्रभाव हो सकते हैं, जिनमें लीड और अन्य योजकों के उपयोग शामिल हैं। पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने के लिए उपाय किए जा सकते हैं, जिसमें सटीक रूप से पेंट मात्रा का अनुमान लगाया जा सकता है ताकि बर्बादी कम हो, पेंट, कोटिंग्स, पेंटिंग एक्सेसरीज और तकनीकों का उपयोग पर्यावरण से पसंदीदा रूप से किया जा सके। संयुक्त राज्य पर्यावरण संरक्षण एजेंसी दिशानिर्देश और ग्रीन स्टार रेटिंग कुछ मानक हैं जिन्हें लागू किया जा सकता है।

## कागज

कागज का पर्यावरणीय प्रभाव महत्वपूर्ण है, जिसके कारण व्यापार और व्यक्तिगत दोनों स्तरों पर उद्योग और व्यवहार में बदलाव आया है। प्रिंटिंग प्रेस और लकड़ी की अत्यधिक मशीनीकृत कटाई जैसी आधुनिक तकनीक के उपयोग के साथ, कागज एक सस्ता वस्तु बन गया है। इससे उपभोग और अपशिष्ट का उच्च स्तर बढ़ गया है। पर्यावरण संगठनों द्वारा लॉबिंग के कारण पर्यावरण जागरूकता में वृद्धि और सरकारी

विनियमन में वृद्धि के साथ अब लुगदी और कागज उद्योग में स्थिरता की प्रवृत्ति है।

## प्लास्टिक

कुछ वैज्ञानिकों का सुझाव है कि 2050 तक महासागरों में मछली की तुलना में अधिक प्लास्टिक हो सकता है।

## कीटनाशकों

कीटनाशकों का पर्यावरणीय प्रभाव अक्सर उन लोगों के इरादे से अधिक होता है जो उनका उपयोग करते हैं। 98% से अधिक स्प्रेड कीटनाशकों और 95% हर्बिसाइड्स नक्षत्र प्रजातियों, वायु, पानी, नीचे तलछट, और भोजन सहित अपनी लक्षित प्रजातियों के अलावा एक गंतव्य तक पहुंचते हैं। कीटनाशक भूमि और पानी को प्रदूषित करता है जब यह उत्पादन स्थलों और भंडारण टैंक से निकलता है, जब यह खेतों से निकलता है, जब इसे छोड़ दिया जाता है, जब इसे हवाई रूप से छिड़क दिया जाता है, और जब इसे शैवाल को मारने के लिए पानी में फेंक दिया जाता है।

## फार्मास्यूटिकल्स और व्यक्तिगत देखभाल उत्पादों

फार्मास्यूटिकल्स और पर्सनल केयर उत्पादों (पीपीसीपी) का पर्यावरणीय प्रभाव काफी हद तक सट्टा है। पीपीसीपी व्यक्तिगत स्वास्थ्य या कॉस्मेटिक कारणों और पशुओं के विकास या स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए कृषि व्यवसाय द्वारा उपयोग किए जाने वाले उत्पादों के लिए उपयोग किए जाने वाले पदार्थ हैं। दुनिया भर में जल निकायों में पीपीसीपी का पता चला है। मनुष्यों और पर्यावरण पर इन रसायनों के प्रभाव अभी तक ज्ञात नहीं हैं, लेकिन आज तक कोई वैज्ञानिक साक्ष्य नहीं है कि वे मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं।

## खनिज

खनन के पर्यावरणीय प्रभाव में खनन प्रक्रियाओं से रसायनों द्वारा क्षरण, सिंकहोल्स का गठन, जैव विविधता का नुकसान, और मिट्टी, भूजल और सतह के पानी का प्रदूषण शामिल है। कुछ मामलों में, बनाए गए मलबे और मिट्टी के भंडारण के लिए उपलब्ध कमरे को बढ़ाने के लिए खानों के आस-पास अतिरिक्त वन लॉगिंग की जाती है। पर्यावरणीय क्षति के निर्माण के अलावा, रसायनों के रिसाव के परिणामस्वरूप प्रदूषण भी स्थानीय आबादी के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। कुछ देशों में खनन कंपनियों को पर्यावरणीय और पुनर्वास कोडों का पालन करना आवश्यक है, यह सुनिश्चित करना कि क्षेत्र का खनन अपने मूल राज्य के करीब लौटाया जाए। कुछ खनन विधियों में

महत्वपूर्ण पर्यावरणीय और सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रभाव हो सकते हैं।

### ट्रांसपोर्ट

परिवहन का पर्यावरणीय प्रभाव महत्वपूर्ण है क्योंकि यह ऊर्जा का एक प्रमुख उपयोगकर्ता है, और दुनिया के अधिकांश पेट्रोलियम को जलता है। यह नाइट्रस ऑक्साइड और कणों सहित वायु प्रदूषण बनाता है, और कार्बन डाइऑक्साइड के उत्सर्जन के माध्यम से ग्लोबल वार्मिंग में एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता है, जिसके लिए परिवहन सबसे तेजी से बढ़ते उत्सर्जन क्षेत्र है। उपसेक्षक द्वारा, सड़क परिवहन ग्लोबल वार्मिंग में सबसे बड़ा योगदानकर्ता है।

विकसित देशों में पर्यावरण नियमों ने व्यक्तिगत वाहन उत्सर्जन को कम कर दिया है। हालांकि, वाहनों की संख्या में वृद्धि और प्रत्येक वाहन के अधिक उपयोग से यह ऑफसेट हो गया है। सड़क वाहनों के कार्बन उत्सर्जन को कम करने के कुछ मार्गों का अध्ययन किया गया है। ऊर्जा उपयोग और उत्सर्जन बड़े पैमाने पर मोड के बीच भिन्न होते हैं, जिससे पर्यावरणविदों को हवा और सड़क से रेल और मानव संचालित परिवहन में संक्रमण के लिए बुलाया जाता है, और परिवहन विद्युतीकरण और ऊर्जा दक्षता में वृद्धि होती है।

### विमानन

विमानन का पर्यावरणीय प्रभाव तब होता है क्योंकि विमान इंजन शोर, कणों और गैसों को उत्सर्जित करते हैं जो जलवायु परिवर्तन और वैश्विक डापउपदह में योगदान देते हैं। ऑटोमोबाइल से उत्सर्जन में कटौती और अधिक ईंधन-कुशल और कम प्रदूषण वाले टर्बोफैन और टर्बोप्रॉप इंजनों के बावजूद, हाल के वर्षों में हवाई यात्रा की तीव्र वृद्धि विमानन के लिए जिम्मेदार कुल प्रदूषण में वृद्धि में योगदान देती है। ईयू में, 1990 से 2006 के बीच विमानन से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में 87% की वृद्धि हुई। इस घटना की ओर अग्रसर अन्य कारकों में से हाइपरमोबाइल यात्रियों और सामाजिक कारकों की बढ़ती संख्या है जो लगातार यात्रा करने वाले कार्यक्रमों जैसे हवाई यात्रा आम जगह बना रहे हैं।

### सड़कें

सड़कों के पर्यावरणीय प्रभाव में राजमार्गों (सार्वजनिक सड़कों) जैसे शोर, प्रकाश प्रदूषण, जल प्रदूषण, आवास विनाश और स्थानीय वायु गुणवत्ता के स्थानीय प्रभाव शामिल हैं और वाहन उत्सर्जन से जलवायु परिवर्तन सहित व्यापक प्रभाव। सड़कों, पार्किंग और अन्य संबंधित सुविधाओं के डिजाइन,

निर्माण और प्रबंधन के साथ-साथ वाहनों के डिजाइन और विनियमन से अलग-अलग डिग्री में प्रभाव बदल सकते हैं।

### शिपिंग

शिपिंग के पर्यावरणीय प्रभाव में ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन और तेल प्रदूषण शामिल है। 2007 में, शिपिंग से कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन वैश्विक कुल के 4 से 5% होने का अनुमान लगाया गया था, और 2020 तक अंतरराष्ट्रीय समुद्री संगठन (आईएमओ) द्वारा 72% तक बढ़ने का अनुमान लगाया गया है, यदि कोई कार्रवाई नहीं की जाती है। शिपिंग के माध्यम से नए क्षेत्रों में आक्रामक प्रजातियों को शुरू करने की संभावना भी होती है, आमतौर पर जहाज के पतवार से खुद को जोड़कर।

### सैन्य

सामान्य सैन्य खर्च और सैन्य गतिविधियों ने पर्यावरण प्रभाव को चिह्नित किया है। संयुक्त राज्य अमेरिका की सेना को दुनिया के सबसे खराब प्रदूषक माना जाता है, जो खतरनाक सामग्रियों से दूषित 39,000 से अधिक साइटों के लिए जिम्मेदार है। कई अध्ययनों में उच्च सैन्य खर्च और उच्च कार्बन उत्सर्जन के बीच एक मजबूत सकारात्मक सहस्र भी पाया जाता है जहां वैश्विक खर्च में ग्लोबल नॉर्थ की तुलना में उत्तर उत्तर में कार्बन उत्सर्जन में वृद्धि पर सैन्य खर्च का बड़ा प्रभाव पड़ा है। सैन्य गतिविधियां भूमि उपयोग भी कर रहे हैं और धर्मनिरपेक्ष-केंद्रित हैं।

सेना के पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है। भूमि प्रबंधन, संरक्षण और क्षेत्र के हरित होने में सहायता करने वाले सेनाओं के कई उदाहरण हैं। इसके अतिरिक्त, कुछ सैन्य प्रजातियों ने संरक्षणवादियों और पर्यावरण वैज्ञानिकों के लिए बेहद सहायक साबित हुए हैं।

### युद्ध

साथ ही मानव जीवन और समाज की लागत, युद्ध का एक महत्वपूर्ण पर्यावरणीय प्रभाव है। रिकॉर्ड किए गए इतिहास के लिए या युद्ध के दौरान युद्ध के दौरान छिद्र पृथ्वी विधियों का उपयोग किया गया है, लेकिन आधुनिक प्रौद्योगिकी युद्ध के साथ पर्यावरण पर बहुत अधिक विनाश हो सकता है। अप्रत्याशित वतकदंबम भूमि का उपयोग आगे के उपयोग के लिए अनुपयोगी या खतरनाक या घातक में पहुंच बनाने के लिए कर सकते हैं।

## अध्ययन का उद्देश्य

1. भौतिक पर्यावरण पर जनसंख्या वृद्धि के प्रभाव पर अध्ययन
2. कृषि भूमि हानि और मिट्टी का कटाव पर अध्ययन

## निष्कर्ष

तेजी से जनसंख्या वृद्धि पृथ्वी के लिए चिंता का विषय बनी हुई है क्योंकि इसका कई गुना प्रभाव है, सबसे महत्वपूर्ण पर्यावरणीय क्षरण है। अत्यधिक जनसंख्या के परिणाम औद्योगिकीकरण हैं। अध्ययन से पता चलता है कि तेजी से जनसंख्या वृद्धि के कारण प्राकृतिक संसाधनों की अधिकता हो गई है। वनों की कटाई से वनों का आवरण सिकुड़ गया है, जो अंततः मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। पृथ्वी में वायु प्रदूषण की काफी मात्रा सांस की बीमारियों से पीड़ित लोगों की संख्या को बढ़ाती है और कई बार मौतों और गंभीर स्वास्थ्य खतरों का कारण बनती है। समय पर उपचार संयंत्रों की स्थापना समय की आवश्यकता के अनुसार की जानी चाहिए और इसके उपयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। नदी में कचरे को निपटाने वाले उद्योगों पर भारी जुर्माना लगाया जाना चाहिए। इसके अलावा, भूजल संदूषण को रोकने के लिए लैंडफिल का उचित प्रबंधन किया जाना है। चूंकि झुग्गियां जल प्रदूषण के प्रमुख स्रोतों में से एक हैं, इसलिए मलिन बस्तियों को पानी और स्वच्छता की सुविधा के लिए उचित उपाय किए जाने चाहिए।

## संदर्भ

1. अग्रवाल, बी (1997): "डर, एनवायरनमेंट एंड पॉवर्टी इंटरलिंक्स: रूरल इंडिया, 1971-91",
2. वर्ल्ड डेवलपमेंट, वॉल्यूम.25, नंबर 1, पीपी.23-52-90 (1995),
3. "एंबिएंट एयर क्वालिटी-स्टेटसिटी एंड स्टैटिस्टिक्स, सेंट्रल पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड, ऑन, (1997),"
4. धनबाद वाटर सप्लाई कट-ऑफ शू, द टेलीग्राफ, आनंद बाजार पत्रिका लिमिटेड, कलकत्ता, 11 दिसंबर, 1997.
5. ऑन, (1997), "ष्टिनी किलर", डाउन टू अर्थ, सोसाइटी फॉर एनवायरनमेंटल कम्युनिकेशंस, नई दिल्ली, 15 नवंबर, 1997।
6. भार्गव, गोपाल, (1992), प्रदूषण और इसका नियंत्रणय मित्तल पब्लिशिंग हस्ते, नई दिल्ली। भार्गव, गोपाल,

(1999), "द प्रदूषण स्टोरी इन ब्लैक एंड व्हाइट", डाउन टू अर्थ, सुनीता नारायण प्रकाशन, नई दिल्ली

7. कामत, एस.आर. और ए। ए। महशूर, (1997), द हिंदू 7 में "वायु प्रदूषण-धीमा जहर"। पर्यावरण, मद्रास का सर्वेक्षण 18। परिवार नियोजन दुनिया भर में: 2002 डेटा शीट।
8. वाशिंगटन, डीसी: जनसंख्या संदर्भ ब्यूरोय 2002. www-prb-org/pdf/FamPlanWorldwide\_Eng-pdf 6 मार्च 2009.9 को एक्सेस किया गया। भारत सरकार, (2001), वन राज्य रिपोर्ट, पर्यावरण मंत्रालय और 10। वन, भारतीय वन सर्वेक्षण, देहरादून।
9. ११। उपाय डीएचएस: जनसांख्यिकीय और स्वास्थ्य सर्वेक्षण। कैलवर्टन, एमडी: मैक्रो इंटरनेशनल इंक। Www-measuredhs-com/A 6 मार्च, 2009.12 तक पहुँचा।
10. जनसंख्या और आर्थिक विकास लिंकेज 2007 डेटा शीट। वाशिंगटन, डीसी: जनसंख्या संदर्भ ब्यूरोय 2007. www-prb-org/pdf07/PopEconDevDS-pdfA 6 मार्च 2009.13 को एक्सेस किया गया।
11. जनसंख्या संदर्भ ब्यूरो (च्छ), 2001, विश्व जनसंख्या डेटा पत्रक, वाशिंगटन, D-C-14A
12. स्वास्थ्य में धन गैप। वाशिंगटन, डीसी: जनसंख्या संदर्भ ब्यूरोय 2004. www-prb-org/Source/ACFAC29-pdf 6 मार्च, 2009

## Corresponding Author

### Shashikala Patel\*

Research Scholar, Awdesh Pratap Singh University, Rewa (MP)